

डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 1, ऐतिहासिक यीशु सर्वेक्षण

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

सुप्रभात। यह मेरे सिनॉटिक गॉस्पेल कोर्स की रिकॉर्डिंग है, जिसे फिलाडेल्फिया के उपनगरीय इलाके में बाइबिल थियोलॉजिकल सेमिनरी में कई बार पढ़ाया गया है। भगवान की इच्छा से, हम यहाँ लगभग 12 बड़े विषयों को कवर करने का प्रयास करने जा रहे हैं।

हम ऐतिहासिक यीशु से शुरू करेंगे, यीशु के धार्मिक विचारों पर थोड़ा नज़र डालेंगे, और फिर यीशु के कथित ऐतिहासिक विचारों पर, देववाद, तर्कवाद, आदर्शवाद, रोमांटिकवाद और संदेहवाद द्वारा सुझाए गए यीशु के कुछ चित्रों पर नज़र डालेंगे। फिर हम यीशु के बारे में वर्तमान स्थिति पर थोड़ा नज़र डालेंगे, पिछली पीढ़ी में प्रकाशित कुछ लोकप्रिय पुस्तकें, और फिर संभवतः यीशु संगोष्ठी पर एक संक्षिप्त नज़र डालेंगे, वापस आकर यीशु के उदार जीवन और इस तरह के अन्य विषयों पर एक सारांश तैयार करेंगे। यह लगभग 12 में से हमारा पहला बड़ा विषय है।

फिर हम कुछ समय लेकर अंतर-नियम अवधि को देखेंगे, और फिर फारसियों, यूनानियों, हसमोनियों और रोमनों के शासन को देखेंगे, यीशु के समय मसीहाई उम्मीद के बारे में थोड़ा सोचेंगे, और फिर यीशु के मंत्रालय से आगे जाकर यहूदी राज्य के अंत को देखेंगे, और फिर यरूशलेम के पतन के बाद क्या हुआ। फिर हम अपने तीन में से एक करने जा रहे हैं, मेरा मानना है कि यह व्याख्या, व्याख्या का परिचय, इस बारे में थोड़ा सोचेंगे कि हम सुसमाचारों में कथाओं की व्याख्या कैसे करते हैं, और बुद्धिमान पुरुषों की यात्रा पर मैथ्यू 2 को देखेंगे। फिर, हम उस पर वापस आएंगे जिसे मैं अपने पृष्ठभूमि प्रकार के काम के रूप में सोचता हूँ और समकालिक सुसमाचारों के लेखकत्व और तिथि के बारे में हमारे पास जो जानकारी है उसे देखेंगे।

फिर हम एक और अंश को देखेंगे; हम दृष्टांतों की व्याख्या करने के तरीके पर विचार करेंगे और मत्ती अध्याय 22 में विवाह भोज के यीशु के दृष्टांत को देखेंगे। फिर, हमारे छठे विषय में, यदि आप चाहें, तो हम सुसमाचारों को साहित्यिक कृतियों के रूप में देखेंगे। फिर, सातवें, हम समकालिक समस्या को देखेंगे।

फिर, फिलिस्तीन की भौगोलिक स्थिति, पूरी भूमि और यरुशलम दोनों, पूरे समय में फिलिस्तीन के लिए काफी समान है; जाहिर है, यरुशलम कुछ हद तक अलग है। हम कुछ राजनीतिक विशेषताओं पर भी नज़र डालेंगे। फिर, हम यहाँ चार बाइबिल के वृत्तांतों पर नज़र डालते हैं।

हम चमत्कारों की व्याख्या कैसे करें, इस पर विचार करेंगे और मार्क 5, आयत 1 से 20 में राक्षसों और सूअरों के साथ हुई घटना को देखेंगे। फिर, हम सिनॉटिक्स के बाइबिल धर्मशास्त्र के बारे में थोड़ा सोचना चाहते हैं, विशेष रूप से यह देखते हुए कि यीशु ने राज्य के बारे में क्या कहा है। फिर, हमारे चौथे अंश के रूप में, हम विवादास्पद खातों की व्याख्या कैसे करें, इस पर विचार

करना चाहते हैं और ल्यूक 11 में उस घटना को देखना चाहते हैं जहाँ यीशु पर आरोप लगाया गया है कि, हमें क्या कहना चाहिए, बेलज़ेबूब द्वारा सशक्त किया गया था।

और अंत में, हम फॉर्म आलोचना और संपादन आलोचना पर विचार करके अपनी चर्चा समाप्त करना चाहते हैं। तो अगर आप चाहें तो यही हमारी योजना है। भगवान की इच्छा से, हम इसे लागू करने का प्रयास करना चाहेंगे।

तो, चलिए यहाँ आते हैं और पहले विषय पर नज़र डालते हैं, जिसे हम ऐतिहासिक यीशु कहते हैं। अब, जब तक कि आपने बहुत सुरक्षित जीवन नहीं जिया है, आप जानते हैं कि लोगों के पास यीशु के बारे में बहुत अलग-अलग विचार हैं। इनमें से कुछ अपने धर्म या विश्वदृष्टि से प्रेरित हैं, और अन्य लोग ईमानदारी से ऐतिहासिक डेटा से जूझने का दावा करते हैं।

खैर, हम कुछ प्रभावशाली आधुनिक विचारों का एक त्वरित दृश्य देने जा रहे हैं। हम मूल रूप से धार्मिक विचारों और बाइबिल के आंकड़ों से शुरुआत करने जा रहे हैं, और इसके लिए, आपको वास्तव में इसे पढ़ना होगा और इसका स्वयं अध्ययन करना होगा, और कोई भी ऐसा कर सकता है। इसमें कुछ समय लगेगा, लेकिन बाइबिल का डेटा यीशु की ओर इशारा करता है, जो किसी तरह पूरी तरह से ईश्वर और पूरी तरह से इंसान है, और हम इस पर चर्चा नहीं करने जा रहे हैं।

यह एक धर्मशास्त्र है। जाहिर है, समकालिक सुसमाचारों की हमारी चर्चा में कुछ चीजें सामने आएंगी। अन्य धार्मिक विकल्पों को दो बड़ी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

उनमें से एक यह है कि यीशु केवल मनुष्य है, किसी भी वास्तविक अर्थ में ईश्वर नहीं है, और दूसरा यह है कि यीशु किसी अर्थ में दिव्य है, लेकिन बाइबिल के अर्थ में नहीं, आप जानते हैं, त्रिदेवों में से एक व्यक्ति और पूर्ण रूप से ईश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य। तो, इनमें से पहले का एक बहुत ही त्वरित दृश्य। यीशु केवल मनुष्य था, किसी भी वास्तविक अर्थ में ईश्वर नहीं।

हम नास्तिकता के बारे में एक या दो टिप्पणियों से शुरू करते हैं। जाहिर है, नास्तिकता में, यह दृष्टिकोण है कि कोई ईश्वर नहीं है, इसलिए यीशु किसी भी तरह से ईश्वर नहीं हो सकते, और इसलिए यीशु केवल मनुष्य थे, और कई नास्तिकों ने, वास्तव में, दावा किया है कि यीशु काल्पनिक थे, कि उनका कभी अस्तित्व ही नहीं था। वास्तव में, काल्पनिक यीशु का यह विचार एक समय में मानक साम्यवादी दृष्टिकोण था।

मुझे नहीं पता कि अब वे इस सवाल पर क्या सोचते हैं। एक दूसरा दृष्टिकोण जो कि काफी अलग है, लेकिन फिर भी केवल मनुष्यों के अंतर्गत आता है, किसी भी वास्तविक अर्थ में ईश्वर के अंतर्गत नहीं, वह है इस्लाम। इस्लाम में, इस्लाम ईश्वर में विश्वास करता है, हालांकि यह पूरी तरह से एकेश्वरवादी है, त्रिदेववादी नहीं।

वे मानते हैं कि यीशु एक सच्चे पैगम्बर थे, कि वे वास्तव में एक कुंवारी से पैदा हुए थे, जिसका दावा वे किसी अन्य पैगम्बर के लिए नहीं करते हैं, और कि उन्होंने चमत्कार किए थे, जिसका दावा वे मुहम्मद के लिए भी नहीं करते हैं। खैर, वे। कुरान मुहम्मद के लिए दावा नहीं करता है।

कुछ हदीसों ऐसा करती हैं, और उनका दावा है कि यीशु एक दिन मसीहा के रूप में शासन करने के लिए वापस आएं, लेकिन वे ईश्वर नहीं हैं। जैसा कि मैंने कहा, अल्लाह पूरी तरह से एक है, और उसका कोई बेटा नहीं है, और वे यह भी दावा करते हैं, शायद इस पर कुछ विवाद हो, लेकिन यह कुरान का एक सामान्य पाठ है, कि यीशु क्रूस पर नहीं मरे, बल्कि उन्हें स्वर्ग ले जाया गया, और उनके स्थान पर एक विकल्प रखा गया। तो, यह इस्लाम का एक त्वरित दौरा है।

इनमें से किसी पर भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। उनमें से दो पर जाएँ जो ईसाई धर्म से सीधे विकसित हुए हैं, और इनमें से पहला वह है जिसे मैं पुराना उदारवाद कहता हूँ। यह उदार उदारवाद का वह रूप है जो ईसाई धर्म से उभरा है, संभवतः 1700 के दशक की शुरुआत में ही शुरू हो गया था, लेकिन 1700 के दशक के अंत तक कुछ गति पकड़ ली और फिर 1800 के दशक और यहाँ तक कि 20वीं सदी तक चला।

मूल रूप से, पुराने उदारवाद का मानना है कि सुसमाचारों में बहुत सारी पौराणिक सामग्री है क्योंकि चमत्कार नहीं होते हैं। खैर, यह बहुत सीधा है कि अगर चमत्कार नहीं होते हैं, क्योंकि सुसमाचारों में बहुत सारे चमत्कार हैं, तो वे बहुत विश्वसनीय नहीं हो सकते हैं। तो, उनका दावा है कि भगवान मौजूद हैं, ठीक है? भगवान ने केवल यीशु के माध्यम से ही काम किया, लेकिन किसी तरह लोगों ने उन्हें गलत समझा, और उन्हें शुरुआती गैर-यहूदी ईसाइयों द्वारा देवता बना दिया गया।

वह एक तरह के नैतिक शिक्षक थे, जैसा कि शायद पुराने उदारवाद में सबसे आम दृष्टिकोण था, और उनमें दूसरों की तुलना में अधिक ईश्वर था। मेरा मानना है कि यह हैरी इमर्सन फ़ोसडिक थे जिन्होंने कहा था कि यीशु ईश्वरीय थे, लेकिन मेरी माँ भी ऐसी ही थीं, कुछ इस तरह की बात। इसलिए, यीशु एक उदाहरण के रूप में क्रूस पर मरे, लेकिन उनका पुनरुत्थान केवल एक आध्यात्मिक पुनरुत्थान है।

यहाँ तक कि कार्ल हेनरी ने एक बार कार्ल बार्थ से भी पूछा था, मेरा मानना है कि अगर ईस्टर की सुबह कोई अखबार का रिपोर्टर कब्र पर होता, तो क्या उसके पास रिपोर्ट करने के लिए कुछ होता? और बार्थ ने इसका सीधा जवाब नहीं दिया। पुराने उदारवाद के विकास की ओर बढ़ें, जिसे अक्सर नव-रूढ़िवाद कहा जाता है, और इसमें कई तरह के विचार भी हैं। एक समय में, बुल्टमैन को एक नव-रूढ़िवादी भी माना जाता था, हालांकि बाद में, इसे आम तौर पर छोड़ दिया गया।

पुराने उदारवाद के समान ही सुसमाचारों का दृष्टिकोण, अर्थात्, चमत्कार नहीं होते और ऐसा ही कुछ, लेकिन नव-रूढ़िवाद को लगता है कि इतिहास का यीशु, आस्था के मसीह जितना महत्वपूर्ण नहीं है, इसलिए आपको चीजों के प्रति इस तरह का दो-स्तरीय दृष्टिकोण देखने को मिलता है, और ईसाइयों को इतिहास के यीशु के बजाय आस्था के मसीह में रुचि रखनी चाहिए। यह, यदि आप चाहें तो, धार्मिक मूल्यों को बचाने का एक प्रयास प्रतीत होता है, जबकि तथाकथित वैज्ञानिक इतिहास को स्वीकार करते हुए जिसमें चमत्कार नहीं होते। तो यह इस विचार के लिए चार अलग-अलग दृष्टिकोणों का एक बहुत ही तूफानी दृष्टिकोण है कि यीशु केवल मनुष्य हैं, लेकिन किसी भी वास्तविक अर्थ में भगवान नहीं हैं।

दूसरी तरह की श्रेणी यह है कि यीशु कुछ अर्थों में ईश्वरीय हैं, लेकिन बाइबिल के अर्थ में नहीं। और यहाँ हम सबसे पहले यहोवा के साक्षियों को देखते हैं। यहोवा के साक्षी ऐसे ईश्वर में विश्वास करते हैं जो चमत्कार आदि करता है, हालाँकि ईश्वर इस्लाम के ईश्वर की तरह है, इस अर्थ में कि वह पूरी तरह से एक है।

तो, अगर आप चाहें तो जीसस एक छोटे भगवान हैं। एक सुझाव में, और मुझे नहीं पता कि यह वर्तमान में आधिकारिक है या नहीं, जीसस किसी तरह का पुनर्जन्म है, हम कह सकते हैं, वे उस शब्द का उपयोग नहीं करते हैं, महादूत माइकल के बारे में, कि माइकल को अस्तित्व से बाहर कर दिया गया था, लेकिन उसकी जीवन शक्ति को जीसस में डाल दिया गया था, जैसा कि आप चाहें तो बना सकते हैं। और यह कि इस महादूत माइकल द्वारा, यही वह तरीका है जिससे यहोवा परमेश्वर ने सभी चीजों का निर्माण किया था।

वह सृष्टि में ईश्वर का प्रतिनिधि था। इसलिए, मैं बाइबिल के कुछ अंशों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ जो यीशु को सृष्टि में ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में चित्रित करते हैं। इसलिए, यहोवा के साक्षी के अनुसार, यीशु सर्वशक्तिमान ईश्वर नहीं है, और उसकी पूजा नहीं की जानी चाहिए।

वह एक कुंवारी से पैदा हुआ था, उसने चमत्कार किए, और वह क्रूस पर मर गया; किसी कारण से, उसके शरीर को कब्र में विलीन कर दिया गया, लेकिन वह एक दिन अपने वफादार गवाहों, यहोवा के साक्षियों के लिए एक सांसारिक राज्य स्थापित करने के लिए वापस आने वाला है, यीशु का एक संस्करण कुछ अर्थों में दिव्य है, लेकिन बाइबिल के अर्थ में नहीं। मॉर्मनवाद। मैं यहाँ मॉर्मनवाद पर बहुत अधिक ध्यान देने से बचने की कोशिश करूँगा, जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर मैंने काफी काम किया है, लेकिन मॉर्मन की पुस्तक यीशु के बारे में अपने दृष्टिकोण में काफी रूढ़िवादी, कमोबेश त्रित्ववादी है।

यीशु को कुंवारी से जन्मे, मसीहा, चमत्कार करने वाले के रूप में देखा जाता है जो मृतकों में से जी उठे। लेकिन उनके पास कुछ बाद के शास्त्र हैं। उनके पास पर्ल ऑफ ग्रेट प्राइस नामक कार्य है और एक अन्य कार्य जिसे सिद्धांत और वाचा कहा जाता है, और इन बाद के शास्त्रों के अनुसार, मॉर्मनवाद की शिक्षा यह है कि मनुष्य ईश्वर बन सकते हैं जैसे कि यीशु बने, और जैसे पिता बने, कि पिता कभी मनुष्य थे।

यीशु जब धरती पर थे, तब वे केवल एक मनुष्य थे, हालाँकि वे इस मामले में असामान्य थे कि वे अपने पिता और स्वर्ग में अपनी आध्यात्मिक माँ के ज्येष्ठ आध्यात्मिक पुत्र थे। जब मरियम गर्भवती हुई, तब उन्हें स्वर्ग से भेजा गया था, और उनके स्वर्गारोहण के बाद से वे एक देवता बन गए हैं। हालाँकि, उनकी मृत्यु हमें केवल मूल पाप से बचाती है, और हमें परमेश्वर के प्रति संतुष्ट होने और स्वर्ग के उच्चतम स्तर में प्रवेश करने के लिए बाकी अधिकांश कार्य करने होंगे।

मैं यहाँ एक तीसरी श्रेणी सूचीबद्ध करता हूँ, जिसे यीशु ईश्वर के साथ कुछ अर्थों में मानते हैं, लेकिन बाइबिल के अर्थ में नहीं: न्यू एज मूवमेंट। न्यू एज मूवमेंट विचारों का एक बहुत ही विविध समूह है, जिसकी विशेषता, यदि आप चाहें, तो व्यक्तित्व और उस तरह की चीजों के प्रति पश्चिमी दृष्टिकोणों के मिश्रण से है, जिसमें हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म से आने वाले तत्व शामिल हैं, आमतौर

पर पुनर्जन्म। आम तौर पर, यीशु को महान में से एक के रूप में देखा जाता है, लेकिन आमतौर पर, सबसे महान नहीं, जिन्हें वे आरोही गुरु कहते हैं, वे लोग जो अपने आध्यात्मिक प्रयास और ज्ञान के माध्यम से, अधिकांश मनुष्यों के स्तर से बहुत ऊपर उठ गए हैं।

आप भी, न्यू एज आंदोलन में, एक या अधिक तकनीकों के माध्यम से भगवान बन सकते हैं जो गुरु से गुरु तक भिन्न होती हैं। न्यू एज आंदोलन में क्राइस्ट शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर आध्यात्मिक ज्ञान के स्तर के लिए किया जाता है और यह केवल यीशु द्वारा ही धारण किया गया पद नहीं था। मेरे पास हमारी IBRI वेबसाइट पर न्यू एज में जीसस नामक एक छोटा सा पावरपॉइंट है, जो न्यू एज के दो शिक्षकों, एडगर कैस और बेंजामिन क्रिम द्वारा यीशु के विचारों को रेखांकित करता है।

तो, यह एक तरह से विभिन्न धार्मिक विचारों का संक्षिप्त विवरण है। यह पूरे स्पेक्ट्रम को कवर नहीं करता है, लेकिन आपको वहां मौजूद विविधता का अंदाजा देता है। हम आगे उन विचारों के बारे में सोचना चाहते हैं जिन्हें हम कथित रूप से ऐतिहासिक विचार कह सकते हैं।

पिछले 200 वर्षों में, वास्तविक ऐतिहासिक यीशु को प्रस्तुत करने के लिए कई प्रयास किए गए हैं, जो कथित तौर पर सुसमाचारों में चित्रित व्यक्ति से काफी अलग हैं। ये प्रयास नियमित रूप से यह मानते हैं कि चमत्कार नहीं होते हैं। उन्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह इस पूरे दौर की एक विशेषता है क्योंकि उन्हें किसी तरह से विज्ञान द्वारा गलत साबित किया गया है, इसलिए सुसमाचार, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, चमत्कारों से भरे होने के कारण विश्वसनीय नहीं हो सकते हैं।

ऐसे विचारों के समर्थक सुसमाचार की कुछ सामग्री को स्वीकार करते हैं और बाकी को अस्वीकार करते हैं, और वे इस बात पर भिन्न होते हैं कि वे किसे स्वीकार करते हैं और किसे अस्वीकार करते हैं, हालांकि वे चमत्कारों को अस्वीकार करने में सहमत हैं। हम यहाँ कुछ उदाहरण देने जा रहे हैं जो पिछले 200 वर्षों में, 1800 से पहले से विभिन्न दार्शनिक आंदोलनों की विशेषता है। अल्बर्ट श्वित्ज़र ने 1900 के ठीक बाद लिखी अपनी पुस्तक द केस्ट ऑफ़ द हिस्टोरिकल जीसस में, यदि आप चाहें तो, मसीह की 100 से अधिक ऐसी उदार जीवनियों पर चर्चा की है।

मुझे याद है कि जब मैंने बहुत समय पहले इसे पहली बार पढ़ा था, तो जब आप पहला अध्याय पढ़ते हैं, तो यह थोड़ा डरावना लगता है। आप कहते हैं, वाह, क्या होगा अगर यीशु वास्तव में ऐसे होते? लेकिन जब आप उनमें से 50 या 75 पढ़ लेते हैं, तो आप कहेंगे, ये लोग अंधेरे में तीर चला रहे हैं। उन्होंने ईसाई धर्म के लिए महत्वपूर्ण कुछ फेंक दिया है, और फिर वे मूल रूप से उसके बाद इधर-उधर भटक रहे हैं, इस तथ्य के बावजूद कि ये लोग बुद्धिमान हैं, और उनमें से कई बहुत ही विद्वान हैं।

खैर, हम इस पर नज़र डालेंगे और इनमें से हर एक को दार्शनिक दृष्टिकोण के अंतर्गत वर्गीकृत करेंगे, हालाँकि जो लोग ऐसा कर रहे हैं वे दार्शनिक नहीं हैं, लेकिन वे मूल रूप से किसी न किसी

तरह के दर्शन को मानते हैं। तो सबसे पहले हम देववाद से शुरुआत करते हैं। देववाद ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रूप में देखता है, लेकिन वह सृष्टिकर्ता घड़ीसाज़ की तरह है।

वह ब्रह्मांड को एक साथ रखता है, लेकिन उसके बाद वह इसके साथ कोई छेड़छाड़ नहीं करता। वह ऐसा व्यक्ति है जो मानवीय मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता, ठीक वैसे ही जैसे घड़ी बनाने वाले के लिए घड़ी के पिछले हिस्से को खोलना और उसके अंदर की चीज़ों से छेड़छाड़ करना बहुत ही घटिया होगा। इसलिए, देववादियों को लगता है कि ब्रह्मांड में चमत्कार करते रहने वाले ईश्वर का होना बहुत ही घटिया होगा।

मुझे लगता है कि वे इस संभावना पर विचार नहीं करते कि ब्रह्मांड एक घड़ी नहीं हो सकता है, बल्कि गिटार, या वायलिन, या एक इंटरैक्टिव गेम जैसा कुछ हो सकता है जिसमें इसे खिलाड़ी के लिए डिज़ाइन किया गया है, अगर आप चाहें, जो इस मामले में निर्माता भी है, इस विशेष उपकरण, ब्रह्मांड के साथ विभिन्न चीज़ें करने के लिए हस्तक्षेप करने के लिए। खैर, हमारे विषय पर वापस आते हुए, हम हरमन सैमुअल रीमारस और उनकी पुस्तक के बारे में थोड़ा सोचना चाहते हैं, जो वास्तव में टुकड़ों का एक संग्रह था। उन्होंने जो पूरी किताब तैयार की थी, वह कभी प्रकाशित नहीं हुई, लेकिन किताब को वुफेनबुडेल फ्रैगमेंट्स कहा जाता है और इसे 1774 से 1778 तक प्रकाशित किया गया था।

रीमारस के मरने के बाद ही प्रकाशित हुआ था, और इसे टुकड़ों में प्रकाशित किया गया था, और शायद पूरी चीज़ अंततः प्रकाशित हो गई होती अगर उन अंशों पर प्रतिक्रिया न होती जो प्रकाशित हुए थे। यहाँ हम जिन दो अंशों में रुचि रखते हैं, वे यीशु से संबंधित हैं। इनमें से एक अंश का नाम है पुनरुत्थान की कहानी के बारे में, और दूसरे का नाम है यीशु और उनके शिष्यों के उद्देश्य। रीमारस के अनुसार, यीशु ने यहूदी-प्रकार का मसीहा होने का दावा किया, यानी, वह जो इजरायल को उनके राजनीतिक उत्पीड़कों से बचाने, उन्हें भगवान के पास वापस लाने और इस तरह की अन्य बातें करने वाला था।

रेड्मरस के अनुसार, और इसलिए उसने ऐसा करने का प्रयास किया, लेकिन उसने एक नया धर्म स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया। उसने, रेड्मरस के अनुसार, कुछ मनोदैहिक उपचार किए। आप पाएंगे कि बहुत से शुरुआती उदारवादी, कम से कम, यह मानते हैं कि यीशु उस तरह के उपचार करने में सक्षम था, मुझे लगता है, जो गैर-ईसाई सोचते हैं कि करिश्माई लोग कर सकते हैं या उस तरह का कुछ, कि वे चमत्कारी नहीं हैं, लेकिन वे किसी तरह के मनोदैहिक या सम्मोहन या उस तरह के उपचार हैं।

खैर, यीशु ने रोम के खिलाफ विद्रोह शुरू करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे, और इसलिए उन्हें एक क्रांतिकारी के रूप में मौत की सजा दी गई। हालाँकि, उनकी मृत्यु के बाद, उनके शिष्यों को एहसास हुआ कि वह असफल हो गए थे, लेकिन वे काम करने की आदत से बाहर हो गए थे। जैसा कि हर कोई जो पादरी नहीं है, जानता है कि पादरी सप्ताह में एक बार 30 मिनट या 15 मिनट का उपदेश देने के अलावा कुछ नहीं करते हैं, और इसलिए यह एक शिष्य है, जो काम करने की आदत से बाहर हो गया है, एक नया धर्म शुरू करने का फैसला किया, और

इसलिए उन्होंने कब्र से यीशु के शरीर को चुरा लिया, दावा किया कि वह मृतकों में से जी उठे थे, और दावा किया कि उन्होंने उन्हें इस नए धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था।

इसलिए, उन्होंने एक नई परलोक विद्या का आविष्कार किया जिसमें मसीहा दूसरी बार वापस आएगा। खैर, रेइमरस की सामग्री के प्रकाशन ने सनसनी मचा दी, उसकी प्रतिष्ठा को नष्ट कर दिया, और उसके परिवार ने अंशों के आगे किसी भी प्रकाशन को हतोत्साहित किया। तो वह रेइमरस था।

हालाँकि, रीमारस ने सनसनी के अलावा एक और प्रभाव डाला। रीमारस के काम ने बाद के उदार पुनर्निर्माणों के लिए रास्ता खोल दिया जो सामान्य रूप से कम कठोर थे। इसने नए नियम के पत्रों, पॉल और पीटर और जॉन के पत्रों को अनदेखा करने, यीशु के अंत समय की शिक्षा, युगांतशास्त्रीय शिक्षा पर जोर देने के लिए एक मिसाल कायम की, जिसे रीमारस और अधिकांश उदारवादी वास्तव में पसंद नहीं करते हैं, और यह दावा करते हैं कि सुसमाचार में अधिकांश सामग्री यीशु के पास वापस जाने के बजाय प्रेरितों या बाद के चर्च की रचना थी।

तो यह देववाद और रीमारस 'वुल्फ और बूडल अंश हैं। हम लगभग 50 साल आगे तर्कवाद की ओर बढ़ते हैं, और तर्कवाद एक विश्वदृष्टि है जो सोचती है कि रहस्योद्घाटन अनावश्यक है क्योंकि नैतिक सत्य ही वास्तव में मायने रखता है। यह शाश्वत है, और यह अच्छे तर्क से अनुमान लगाया जा सकता है कि आपको यह देखने के लिए वास्तव में दुनिया भर में बहुत अधिक देखने की ज़रूरत नहीं है कि चीजें कैसी हैं। आप अपने दिमाग के अंदर देख सकते हैं और देख सकते हैं कि चीजें कैसी हैं।

यह विचार ग्रीको-रोमन दार्शनिकों के समय से ही मौजूद था और अगर आप चाहें तो इसे 1600 के दशक में भी पुनर्जीवित किया गया था, लेकिन यह 1800 के दशक की शुरुआत में मजबूती से उभर रहा था। हम यहाँ हेनरिक पॉलस को देखना चाहते हैं। रीमारस के विपरीत, हेनरिक पॉलस ने एक रचना लिखी, लेबेन जेसु, जीसस का जीवन, और लेबेन जेसु जर्मन है, जिसने मसीह के सहानुभूतिपूर्ण जीवन को लिखा।

इसलिए, वह यीशु की ओर आकर्षित था और कम से कम उसे यीशु का अपना संस्करण पसंद था। और इसलिए हम रेमारस, पॉलस के साथ देखते हैं, जो शायद मैंने पहले उल्लेख किया था, वह धार्मिक उदारवाद की अधिक विशेषता है, यानी यीशु असामान्य अंतर्दृष्टि और क्षमता वाले एक महान नैतिक शिक्षक थे। पॉलस ने जो कुछ सिखाया, उसका अधिकांश हिस्सा आज भुला दिया गया है।

पॉलस के काम का मुख्य प्रभाव चमत्कारों के बारे में उनका तर्कवादी दृष्टिकोण था। अर्थात्, उन्होंने दावा किया कि चमत्कार वास्तव में हुए थे, लेकिन वे चमत्कारी नहीं थे। उन्हें गैर-अलौकिक घटनाओं के रूप में गलत समझा गया, और शिष्यों या भीड़ में मौजूद लोगों ने सोचा कि वे चमत्कारी थे।

तो, यीशु ने वास्तव में लोगों को ठीक किया, लेकिन यह किसी अज्ञात आध्यात्मिक शक्ति द्वारा था जो तंत्रिका तंत्र पर काम करती थी - सम्मोहन या ईएसपी या उस तरह की कोई चीज़। पॉलस के अनुसार, यीशु ने प्राकृतिक चिकित्सा और आहार का भी इस्तेमाल किया, जैसा कि आज के समग्र चिकित्सक और स्वस्थ भोजन करने वाले लोग करते हैं।

यीशु के स्वभाव के चमत्कारों को स्पष्ट रूप से समझाना कठिन है। पॉलस ने सुझाव दिया कि निम्नलिखित प्रकार की चीजें एक से दूसरे में भिन्न थीं। यीशु पानी पर चल रहे थे।

वह वास्तव में किनारे पर या रेत के टीले पर चल रहा था। और इसलिए, जब पीटर नाव से बाहर निकलता है, तो वह रेत के टीले पर कदम नहीं रखता और स्वाभाविक रूप से वह अंदर चला जाता है आदि। तो मूल रूप से यही समस्या है।

यीशु द्वारा 5,000 लोगों को भोजन कराने के बारे में क्या कहा जाए? खैर, यह पता चला है कि उनमें से लगभग 2,500 लोगों के पास अपने कपड़ों के नीचे काफी अच्छा दोपहर का भोजन छिपा हुआ है। लेकिन जब यह छोटा लड़का अपनी रोटियाँ और मछलियाँ लाता है, तो यह बाकी सभी लोगों को शर्मिंदा करता है, और वे अपनी रोटियाँ और मछलियाँ लाते हैं, और वे उन्हें बाँटते हैं, और सभी के लिए बहुत कुछ होता है। यीशु के रूपांतरण के बारे में क्या? खैर, आपको याद है कि जब यह हुआ था, तब शिष्य लगभग आधे सोए हुए थे, और वे एक पहाड़ की चोटी पर थे, और सूरज उग रहा था, और यह पहाड़ की चोटी के पश्चिमी भाग में हुआ।

यीशु पहाड़ की चोटी पर हैं, और सूरज उनके पीछे से उग रहा है, इसलिए यह उनके बालों, उनके कपड़ों आदि को रोशन कर रहा है। और इसलिए, वे इस तरह चमकते हैं, और यरूशलेम के इन दो प्रतिष्ठित लोगों को, वे मूसा और एलिय्याह समझ लेते हैं। तो यही रूपांतरण है।

लाजरस और अन्य लोगों का पुनरुत्थान। यीशु ने पहचाना कि वे कोमा में थे और किसी तरह उन्हें जगाने में कामयाब रहे। यीशु का खुद का पुनरुत्थान भी कुछ इसी तरह का था, क्योंकि पॉलस के अनुसार, वे क्रूस पर नहीं मरे, बल्कि वे कोमा में चले गए।

ठंडी कब्र और सुगंधित मसालों ने उसे फिर से जीवित कर दिया। भूकंप ने सुविधाजनक रूप से पत्थर को हटा दिया, और यीशु कुछ समय के लिए अपने शिष्यों को दिखाई दिए। लेकिन वास्तव में, क्रूस पर चढ़ाए जाने से वह बहुत बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया था, और इसलिए बाद में उसने उन्हें मरने के लिए छोड़ दिया।

अपने अंतिम प्रस्थान में, वह पहाड़ी पर बादलों में चढ़ता है और वे सोचते हैं कि यह स्वर्गारोहण है। खैर, यह चमत्कारों के बारे में पॉलस का तर्कवादी दृष्टिकोण है। पॉलस का काम ऐसे उदार विचारों को फैलाने में महत्वपूर्ण था जिसे हम ईसाई मंडली कहेंगे।

इसलिए, देववाद ईसाई धर्म से काफी अलग था। इसका मतलब यह नहीं है कि ईसाई होने का दावा करने वाले लोग वास्तव में देववादी नहीं थे, लेकिन अब आपको ईसाई मंडलियों में चीजों के बारे में अधिक तर्कसंगत दृष्टिकोण मिलना शुरू हो गया है, और आपको ईसाई धर्म का

उदारवादी संस्करण मिलना शुरू हो गया है। यानी, ऐसे लोग जो यीशु के प्रति सहानुभूति का दावा करते हैं लेकिन फिर भी चमत्कारों को अस्वीकार करते हैं।

पॉलस ने अपनी नौकरी नहीं खोई, जैसा कि संभवतः रामारिस ने खोई होती अगर वह अभी भी जीवित होते, या पुस्तक पर अपनी प्रतिष्ठा नहीं खोई, जैसा कि वास्तव में रामारिस ने खोई थी। चमत्कारों के प्रति उनके तर्कसंगत दृष्टिकोण, हालांकि उदारवादियों द्वारा भी काफी जल्दी उपहास किया गया था, फिर भी कुछ मामलों में उनके द्वारा इसका उपयोग किया जाता है। इसलिए कभी-कभी, हम उदारवादी संडे स्कूल की किताब में 5,000 लोगों को खिलाने पर एक संडे स्कूल का पाठ देखेंगे, और यह साझा करने के बारे में होगा।

खैर, वहाँ साझा करने के बारे में कुछ है लेकिन यह निश्चित रूप से वास्तविक चमत्कार का मुख्य बिंदु नहीं है। तो, देववाद और बुद्धिवाद। अब, हम आदर्शवाद की ओर मुड़ते हैं।

आदर्शवाद, बेशक, आज के समय में लोकप्रिय भाषण में बहुत व्यापक तरीके से इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन दार्शनिक हलकों में, यह एक तरह का विश्वदृष्टिकोण है। यह विचार है कि पदार्थ के बजाय मन या विचार मूल वास्तविकता है। उदाहरण के लिए, जिस पंथ को हम ईसाई विज्ञान कहते हैं, वह मानता है कि पदार्थ वास्तव में मौजूद नहीं है, यह मन है जो काम कर रहा है, और इसलिए, यदि आपका मन सही तरीके से प्रबुद्ध हो सकता है, तो यह आपकी बीमारियों पर काबू पा लेगा क्योंकि बीमारियाँ मूल रूप से भ्रम हैं।

खैर, हम डेविड फ्रेडरिक स्ट्रॉस और उनके काम को देखने जा रहे हैं, जिसे लीबनिज़, लाइफ़ ऑफ़ जीसस भी कहा जाता है, जो पॉलस के काम के सिर्फ़ सात साल बाद 1835 में प्रकाशित हुआ था। स्ट्रॉस के अनुसार, यीशु का पूरा जीवन पौराणिक व्याख्या से रंगा हुआ है, न कि सिर्फ़ उनके जन्म और पुनरुत्थान से, जैसा कि कुछ पहले के उदारवादियों ने सुझाया था। स्ट्रॉस यहाँ मिथक को ऐतिहासिक रूप में पहने गए एक कालातीत धार्मिक सत्य के रूप में परिभाषित करते हैं।

तो, ये ऐसी चीज़ें हैं जो वास्तव में इतिहास में नहीं हुईं, लेकिन शिक्षण उद्देश्यों के लिए, उन्हें ऐतिहासिक रूप में संरचित किया गया है। इसलिए, अगर आपको इस तरह की कोई चीज़ पसंद है तो यह एक तरह से परवल्यिक है। और स्ट्रॉस ने दावा किया कि इस ऐतिहासिक रूप को अक्सर पौराणिक सामग्रियों का उपयोग करके बनाया गया था।

इसलिए, स्ट्रॉस के अनुसार, यीशु के जीवन में व्यक्त धार्मिक विचार सत्य हैं, लेकिन घटनाएँ वास्तव में घटित नहीं हुईं। उदाहरण के लिए, स्ट्रॉस के अनुसार मसीह का ईश्वरत्व कोई ऐतिहासिक सत्य नहीं है, बल्कि यह, क्या कहें, उच्चतर विचार है, मनुष्य द्वारा कभी भी कल्पित सर्वोच्च विचार है। यह ईश्वरत्व और मनुष्यत्व की एकता है।

मनुष्य और ईश्वर वास्तव में एक ही हैं, और मसीह के देवत्व को इसे व्यक्त करने के लिए पौराणिक तरीके के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। हम सभी दिव्य हैं, यह हमें हैरी एमर्सन फ़ोसडिक और उनकी माई मदर वाज़ डिवाइन आदि की ओर वापस ले जाता है। लीबनिज़ में,

स्ट्रॉस ने यीशु के रूढ़िवादी और तर्कवादी दोनों विचारों पर हमला किया, विशेष रूप से चमत्कारों के बारे में पॉलस के स्पष्टीकरण का मज़ाक उड़ाया, जिसका मज़ाक उड़ाना निश्चित रूप से कठिन नहीं है, जैसा कि आप पहले ही देख चुके हैं।

फिर भी स्ट्रॉस ऐतिहासिक घटनाओं के लिए अपने स्वयं के कुछ सकारात्मक स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं, शायद इसलिए क्योंकि उन्हें वास्तव में इस बात से कोई सरोकार नहीं था कि वास्तव में क्या हुआ था। वह एक आदर्शवादी हैं। यह बात मायने नहीं रखती।

आप प्लेटो में पहले से ही इसका कुछ हिस्सा देख सकते हैं, जो इतिहास में घटनाओं के बारे में नहीं बल्कि विचारों के बारे में चिंतित था। स्ट्रॉस की पुस्तक को उनके समय में काफी कड़ी प्रतिक्रिया मिली क्योंकि यह ईसाई-विरोधी और तर्क-विरोधी दोनों थी। हालाँकि, इसने 20वीं सदी में बुल्टमैन के लिए आधार तैयार किया, जिसके बारे में हम आगे थोड़ा और बताएंगे, और बुल्टमैन के समय के मिथक-विरोधी स्कूल के लिए।

स्ट्रॉस ने तीन समस्याएँ भी उठाईं, जिनके बारे में हम कह सकते हैं कि वे समस्या क्षेत्र आज भी यीशु के उदारवादी अध्ययनों पर हावी हैं। इनमें से एक चमत्कार बनाम मिथक की समस्या है। उदारवादी हलकों में स्ट्रॉस ने सुसमाचार के वृत्तांत में चमत्कारों को ऐतिहासिक मानने की उदारवादी स्वीकृति को लगभग समाप्त कर दिया।

आज कुछ उदारवादी केवल उपचार के विवरण को ही स्वीकार करते हैं, जो कहते हैं कि यीशु ने कुछ मनोदैहिक उपचार किए थे, जैसा कि आस्था के उपचारक आज भी करते हैं। स्ट्रॉस ने इतिहास के यीशु बनाम आस्था के मसीह का पूरा सवाल उठाया। स्ट्रॉस ने ऐतिहासिक सत्य को धार्मिक मूल्य से अलग किया और उन्होंने आस्था के मसीह के दृष्टिकोण का समर्थन किया।

सभी उदारवादियों ने ऐसा नहीं किया है। कुछ लोग दूसरी दिशा में चले गए हैं। हम यह जानना चाहते हैं कि इतिहास का असली यीशु कैसा था और हम भी उसी धर्म को अपनाना चाहते हैं जो उसने अपनाया था या कम से कम उससे कुछ विचार या कुछ ऐसा ही सीखना चाहते हैं।

तीसरा क्षेत्र सुसमाचार जॉन और सिनॉटिक्स के बीच का अंतर है। स्ट्रॉस ने जॉन, सुसमाचार जॉन की व्यापक अस्वीकृति स्थापित की, इसकी विश्वसनीयता पर रामिरेज़ द्वारा पहले किए गए हमले से अधिक प्रभावी ढंग से हमला करके। तो यह आदर्शवाद है।

अगला रोमांटिकवाद। रोमांटिकवाद तर्क और तर्क पर तर्कवाद के जोर के खिलाफ एक प्रतिक्रिया है। रोमांटिकवाद के लिए, भावनाएं और अंतर्ज्ञान ऐसी अंतर्दृष्टि देते हैं जो आप तर्क के माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते।

क्या हमें यहीं रुक जाना चाहिए और उसके बाद आगे बढ़ना चाहिए? ठीक है। हम यहाँ रोमांटिकवाद पर विचार करने जा रहे हैं, जो तर्कवाद के तर्क और तर्क पर जोर देने के खिलाफ एक प्रतिक्रिया है। रोमांटिकवाद के लिए, भावनाएँ और अंतर्ज्ञान ऐसी अंतर्दृष्टि देते हैं जो आप तर्क के माध्यम से प्राप्त नहीं कर सकते।

जैसा कि अर्नेस्ट रेनन इसे देखते हैं, वह वही है जिस पर हम नज़र डालने जा रहे हैं, और उसका जीवन यीशु का जीवन है, लेकिन फ्रेंच में, ला वी डे जीसस। जैसा कि अर्नेस्ट रेनन इसे देखते हैं, यीशु की सुसमाचार की तस्वीर चमत्कार को हटा दिए जाने के बाद समझ में नहीं आती है। इसलिए, वह सामग्री को यीशु के जीवन में तीन अलग-अलग चरणों में वर्गीकृत करता है।

वह यीशु को एक नैतिक शिक्षक, एक क्रांतिकारी और फिर एक शहीद के रूप में देखता है। रेनन ने दावा किया कि इस दृष्टिकोण के सभी तीन चरण, नैतिक शिक्षक, क्रांतिकारी और शहीद, ऐतिहासिक थे, लेकिन वे किसी तरह सुसमाचार के खातों में एक साथ मिल गए, जिन्हें कालानुक्रमिक रूप से मिलाया गया था, और उनका दावा है कि प्रत्येक पहलू का यीशु के जीवन में एक अलग काल था। सबसे पहले, वह कहते हैं कि यीशु एक नैतिक शिक्षक थे।

यीशु एक आशावादी, सुखद, नैतिक शिक्षक के रूप में शुरू होता है जिसने जॉन बैपटिस्ट से उपदेश देना सीखा था। वह प्रेम के एक सौम्य शिक्षक के रूप में गलील लौटता है और युवा पुरुषों और महिलाओं के एक समर्पित अनुयायी को आकर्षित करता है, साथ ही आकर्षक गैलीलियों का एक बड़ा समूह भी। वह कुछ मनोदैहिक उपचारों को छोड़कर कोई चमत्कार नहीं करता है।

जब वह यरूशलेम जाता है, तो उसे पता चलता है कि रब्बी उसे स्वीकार नहीं करेंगे। परिणामस्वरूप, हम दूसरे चरण में प्रवेश करते हैं। वह एक क्रांतिकारी बन गया और रब्बियों से छुटकारा पाने के लिए अभियान चलाया। वह अधिक अनुयायियों को आकर्षित करने के लिए नकली चमत्कार करना शुरू कर देता है।

जल्द ही, यीशु को एहसास होता है कि उसके आंदोलन को रब्बियों को हराने के लिए पर्याप्त लोकप्रिय समर्थन नहीं है और वह बिना पकड़े जाने के अनिश्चित काल तक चमत्कार करना जारी नहीं रख सकता। इसलिए, हम तीसरे चरण में प्रवेश करते हैं और वह यह है कि वह निर्णय लेता है कि वह सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को त्याग देगा और शहीद हो जाएगा। अपनी मृत्यु से पहले वह एक धार्मिक आंदोलन शुरू करता है ताकि शिक्षाओं को संरक्षित किया जा सके।

वह समूह में एकता लाने के लिए बपतिस्मा और प्रभु भोज के सरल समारोहों की स्थापना करता है और वह नेताओं को चुनता है जिन्हें वह बुलाता है और वह खुद को पकड़े जाने देता है और क्रूस पर मर जाता है। उसकी रणनीति वास्तव में उसकी अपेक्षा से बेहतर काम करती है क्योंकि मैरी मैग्डलीन को भ्रम होता है कि यीशु जीवित है। खैर, यह रेनन का यीशु का जीवन है।

रेनन का काम यीशु के जीवन के उदार पुनर्निर्माण को लोकप्रिय शिक्षित दर्शकों तक फैलाने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछली सभी किताबें तकनीकी कामों के बजाय लिखी गई थीं और विशेष रूप से इसे कैथोलिक धर्म में फैलाती हैं। इसलिए, हम इस समय के आसपास उदार कैथोलिक धर्म की शुरुआत देखना शुरू करते हैं। रेनन ने इस विचार के लिए द्वार खोले कि विश्वसनीयता का आकलन सौंदर्यशास्त्र से किया जा सकता है।

भगवान ऐसा नहीं हो सकते क्योंकि मुझे यह पसंद नहीं है। यह काफी सुंदर नहीं है, और यह विचार अभी भी खत्म नहीं हुआ है। उनका विचार कि सुसमाचारों का कालानुक्रमिक ढांचा अविश्वसनीय है, बाद में आलोचना के रूप में उठाया जाएगा।

वर्तमान स्थिति पर पहुँचने से पहले हम अपने दौरे के अंतिम चरण पर पहुँचते हैं, और यही वह दार्शनिक दृष्टिकोण है जिसे हम संशयवाद कहते हैं। संशयवादी ऊपर बताए गए दृष्टिकोणों से कहीं अधिक संदेहवादी होते हैं, और उन्हें लगता है कि यीशु के जीवन का पुनर्निर्माण करना असंभव है। हम विल्हेम ब्रेडे और उनके काम पर नज़र डालने जा रहे हैं, जो अंग्रेजी शीर्षक मेसियानिक सीक्रेट के साथ रहेगा, जो 1901 में प्रकाशित हुआ था, यानी श्वित्ज़र की ऐतिहासिक यीशु की खोज से बस कुछ साल पहले।

ब्रेडे उस समय प्रचलित पुनर्निर्माणों के विरुद्ध प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, कुछ हद तक ऊपर चित्रित पुनर्निर्माणों की तरह, तर्क देते हुए कि इन चित्रों में बहुत कुछ पंक्तियों के बीच पढ़कर प्राप्त किया गया है और यीशु ने दूसरे आने वाले न्याय, नरक और इस तरह के बारे में जो कहा था, उसे अनदेखा कर दिया है, जो आधुनिक धार्मिक उदारवाद भी करता है। ब्रेडे यीशु के पूर्ण-स्तरीय जीवन का चित्रण करने का प्रयास नहीं करता है, बल्कि एक समस्या को हल करने का प्रयास करता है। वह समस्या यह है कि यदि यीशु ने कभी भी मसीहा होने का दावा नहीं किया जैसा कि धार्मिक उदारवाद ने सोचा था, तो वह लोगों को यह रहस्य बनाए रखने के लिए क्यों कहता रहा, ठीक है? क्षमा करें, मैंने अभी-अभी अपनी बात कही है।

यदि यीशु ने मसीहा होने का दावा किया, तो वह लोगों से यह रहस्य बनाए रखने के लिए क्यों कहता रहा? ब्रेडे का उत्तर है कि मार्क ने मसीहाई रहस्य का आविष्कार किया क्योंकि यीशु ने कभी मसीहा होने का दावा नहीं किया, लेकिन मार्क और उसके साथियों ने सोचा कि वह मसीहा है। ब्रेडे का मानना है कि मार्क का पूरा कथात्मक ढाँचा अविश्वसनीय है और इस सुसमाचार में केवल कुछ व्यक्तिगत कहानियाँ और कथन ही वास्तव में घटित हुए हैं। यीशु के उदार जीवन के हमारे आख्यान में इस बिंदु पर, ध्यान दें कि उदारवादियों ने अब सभी सुसमाचारों को बाहर फेंक दिया है। जॉन देर से आता है, मैथ्यू और ल्यूक मार्क पर आगे बढ़ते हैं, और मार्क अविश्वसनीय है।

जब हम अपनी समकालिक समस्या पर चर्चा करेंगे, तो हम वापस आकर मार्क पर आधारित मैथ्यू और ल्यूक पर चर्चा करेंगे। सुसमाचार के विवरणों के प्रति इस गहरे संदेह ने 1920 के आसपास रुडोल्फ बुल्टमैन और अन्य लोगों द्वारा मसीह के जीवन के लिए रूप आलोचना के आवेदन को जन्म दिया और उसके बाद 1950 तक मसीह के विद्वानों के उदार जीवन के लेखन पर रोक लगा दी। 50 के दशक में ऐतिहासिक यीशु की खोज फिर से शुरू हुई, जिसे उदारवादियों द्वारा तथाकथित दूसरी खोज कहा गया, जो बुल्टमैन द्वारा वकालत किए गए चरम संदेह के एक विशेष रूप से असंतुष्ट थे, और अब हम आम तौर पर तीसरी खोज नामक चरण में हैं।

मैं इस पर विस्तार से चर्चा नहीं करूंगा। मैं वर्तमान स्थिति पर गौर करना चाहता हूँ और यहां हम कई चीजों का खाका खींचने जा रहे हैं, लेकिन वर्तमान स्थिति में काफी विविधता है। रेनन ने अपने जीवन के बारे में लिखते समय एक अवलोकन किया था कि जब आप चमत्कारों को हटा देते हैं तो जीसस का कोई मतलब नहीं रह जाता है और इसलिए उन्होंने जीसस की विभिन्न विशेषताओं को इन तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करना शुरू कर दिया - नैतिक शिक्षक और क्रांतिकारी और शहीद और इसलिए मूल रूप से दावा किया कि कालानुक्रमिक गड़बड़ी हुई है।

यह सच है कि एक बार जब चमत्कार को यीशु की सेवकाई से बाहर कर दिया जाता है, तो उसका व्यक्तित्व और जीवन अर्थहीन हो जाता है, और कई तरह की संभावनाओं की कल्पना की जा सकती है। आधुनिक सिद्धांत अक्सर पहले देखी गई संभावनाओं के विभिन्न संयोजन होते हैं। हम यहाँ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वकालत किए गए कुछ विचारों का एक और त्वरित स्केच देने जा रहे हैं और हम इन्हें पोस्ट-बल्टमैनियन, स्कोनफील्ड के पासओवर प्लॉट, जॉन मार्को के एलेग्रो के सेक्रेड मशरूम और क्रॉस और मॉर्टन स्मिथ के द सीक्रेट गॉस्पेल और जीसस द मैजिशियन कहेंगे और फिर हम जीसस सेमिनार के बारे में थोड़ा सा कहेंगे।

पोस्ट - बल्टमैनियन । पोस्ट-बल्टमैनियन रुडोल्फ बुल्टमैन के पूर्व छात्रों के लिए एक शब्द है, खासकर गुंथर बोर्नकैंप, हंस कोन्सेलमैन, क्लॉस फुच्स, अर्न्स्ट कासेमन और वे सभी बहुत जर्मन लगते थे, जेम्स एम रॉबिन्सन। ठीक है, अमेरिकी।

बोर्नकैंप उन लोगों में से एकमात्र हैं जिन्होंने वास्तव में ए लाइफ ऑफ क्राइस्ट शीर्षक से जीसस नाज़रेथ लिखा था, जिसका अंग्रेजी अनुवाद 1960 में प्रकाशित हुआ था। हालाँकि, अन्य लोगों ने विश्वकोश लेख या जर्नल लेख लिखे। सभी अलौकिकता के विरोधी हैं, लेकिन सभी को लगता है कि बुल्टमैन अपने संदेह में बहुत आगे निकल गए।

उन्हें इतिहास में उससे ज़्यादा दिलचस्पी है और उन्हें लगता है कि न्यू टेस्टामेंट की सामग्री हमें कम से कम यह एहसास दिलाती है कि बुल्टमैन के अनुसार लोग यीशु के बारे में क्या सोचते थे। हालाँकि, उनकी अपनी ऐतिहासिक पद्धति अभी भी बहुत संदेहपूर्ण है। वे जॉन के सुसमाचार को नज़रअंदाज़ करते हैं।

वे सिनॉप्टिक्स का उपयोग करते हैं। वे यीशु की प्रामाणिक घटनाओं और कथनों को असंगति की विधि का उपयोग करके चुनते हैं। वह क्या है? अच्छा एक उदाहरण लेते हैं।

यीशु स्वयं एक यहूदी थे। उनके अनुयायी ईसाई थे। इसलिए, यीशु की बताई गई शिक्षाओं की कोई भी विशेषता जो यहूदी लगती है, वह यीशु के बजाय यहूदियों से जुड़ी हो सकती है।

ठीक है और जो भी सामग्री ईसाइयों को ईसाई लगती है, वह यीशु के बजाय शुरुआती ईसाइयों से जुड़ी हो सकती है। इसलिए केवल वही जो यहूदी धर्म और ईसाई धर्म दोनों के साथ अतुलनीय है, संभवतः यीशु से जुड़ी हो सकती है। इसलिए, हम यीशु की आत्म-समझ प्राप्त करने के लिए इस सामग्री की जांच करते हैं।

खैर, यह यीशु के प्रति बहुत ही न्यूनतम दृष्टिकोण है, लेकिन अजीब बात यह है कि इससे कुछ दिलचस्प परिणाम सामने आते हैं। मैं यहाँ उल्लेख करता हूँ कि असंगति एक कार्यप्रणाली के रूप में समस्या है। मार्टिन लूथर को ही लें।

मार्टिन लूथर एक कैथोलिक थे। उनके अनुयायी लूथरन थे। इसलिए, आप मार्टिन लूथर में कैथोलिक दिखने वाली हर चीज़ को फेंक देते हैं, और आप सभी पारंपरिक रूढ़िवादी धर्मशास्त्र से छुटकारा पा लेते हैं, और आप लूथरन दिखने वाली किसी भी चीज़ को फेंक देते हैं, और आप

शायद इच्छाशक्ति के बंधन या उस तरह की किसी चीज़ के साथ समाप्त हो जाते हैं, लेकिन अगर आप चाहें तो वह भी ऑगस्टिनियन कैथोलिक की तरह दिखता है।

तो, आप क्या करते हैं? खैर, आइए कुछ परिणामों पर नज़र डालें जो पोस्ट-बल्टमैनियन ने प्राप्त किए। उन्होंने कुछ दिलचस्प परिणाम निकाले जो उदारवादी मॉडल के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए यीशु का खुद के बारे में दृष्टिकोण लें।

के सेमन का मानना है कि नए नियम में इस सवाल पर एक बहुत ही अलग माहौल है। यीशु खुद को ईश्वरीय और अद्वितीय रूप से प्रेरित मानते थे और वे एक पैगम्बर से भी महान थे। के सेमन कहते हैं कि यीशु ने वास्तव में मसीहाई दावे किए थे।

बहुत से उदारवादी इस रास्ते पर नहीं जाना चाहते। ज़्यादातर आम लोगों ने, यीशु के खुद के बारे में विचार के बारे में सोचते हुए कहा कि यीशु ने दावा किया था कि वह पापों को क्षमा कर सकता है। किस तरह का व्यक्ति पापों को क्षमा कर सकता है? अच्छा, आपको यहूदियों की टिप्पणी याद होगी जब उन्होंने यीशु को ऐसा कुछ कहते हुए सुना था।

फिर हम यीशु की शिक्षाओं के बारे में सोचते हैं। यीशु का मुख्य संदेश यह है कि परमेश्वर मनुष्यों को वह देने आया है जिसके वे हकदार नहीं हैं और उन्हें बंधन से मुक्त करने आया है।

के सेमन के अनुसार, हम यीशु के संदेश में अनुग्रह और मुक्ति की तस्वीर देखते हैं। हंस कोन्ज़ेलमैन। यीशु ने भविष्य के राज्य की बात की जो कुछ अर्थों में अभी हमारे सामने है।

यह काफी दिलचस्प है क्योंकि जब मैं ड्यूक में न्यू टेस्टामेंट का कोर्स कर रहा था, न कि रूढ़िवादी कोर्स, तो सबसे बड़ी बात यह थी: ओह ठीक है, आपको सुसमाचार में दो तत्व मिलते हैं जो असंगत हैं। भविष्य का राज्य, वर्तमान राज्य। लेकिन यहाँ, कोन्ज़ेलमैन कहते हैं कि वे दोनों ही मौजूद हैं।

वे दोनों यीशु में हैं। इसलिए, यह बिंदु पुराने उदारवाद में नियमित रूप से खो गया था, जो आम तौर पर इन दो तत्वों को विरोधाभास में रखता है। जबकि हाल के वर्षों में ईसाई पहले से ही और अभी तक नहीं के संदर्भ में सोचने लगे हैं कि वहाँ क्या हो रहा है, और वहाँ वास्तविक तनाव है, और यह वास्तव में ईसाई धर्मशास्त्र की एक प्रमुख विशेषता बन गया है।

यीशु का आचरण। ज़्यादातर लोग कहते हैं कि यीशु के कामों से पता चलता है कि वह परमेश्वर के अधीन है, फिर भी वह एक खास अधिकार का दावा करता है। उदाहरण के लिए, मंदिर की सफ़ाई में देखा जा सकता है।

उन्होंने बहिष्कृत लोगों के प्रति भी बहुत दयालुता दिखाई। यीशु के रवैये की तुलना फरीसियों के रवैये से करें। खैर, यह उनका एक त्वरित दौरा है, और ये परिणाम बहुत कम लगते हैं, लेकिन वे चौंकाने वाले हैं।

वे सुझाव देते हैं कि यीशु उदारवादियों द्वारा दी गई बातों से कहीं अधिक है और उन्हें अपने संदेह पर पुनर्विचार करना चाहिए। खैर, हम पोस्ट-बल्टमैनियन से आगे बढ़कर ह्यूग स्कोनफील्ड, द पासओवर प्लॉट 1966 को देखते हैं। ह्यूग स्कोनफील्ड एक उदार ब्रिटिश यहूदी थे जिन्होंने इंटरनेशनल डेड सी स्कॉल कमेटी में काम किया था।

जाहिर है, उन्होंने अपने करियर के शुरूआती दौर में एक समय पर यीशु के दावों को स्वीकार किया था, लेकिन बाद में उन्होंने इसे छोड़ दिया। इसलिए, जाहिर है कि वह एक समय पर किसी तरह के शुरूआती मसीहाई यहूदी थे। वह पुराने नियम की भविष्यवाणी की इंजील व्याख्याओं से काफी परिचित हैं, और अगर अन्य उदारवादी इससे परिचित हैं, तो वे या तो इसका तिरस्कार करते हैं या वे इसे बिल्कुल भी ध्यान में नहीं रखते हैं, लेकिन स्कोनफील्ड ऐसा करते हैं।

शोएनफील्ड के अनुसार, यीशु का मंत्रालय मसीहा, विशेष रूप से उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बारे में पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा करने के लिए एक विस्तृत साजिश है। शोएनफील्ड के विचार में, यीशु को यकीन है कि वह मसीहा है, और वह शिष्यों को इकट्ठा करता है लेकिन अपनी सुरक्षा के लिए सार्वजनिक रूप से मसीहा होने का दावा करने से बचता है। यहाँ ध्यान दें, शोएनफील्ड ने मसीहाई रहस्य के लिए एक अच्छी व्याख्या की है।

बहुत जल्दी मसीहा होने का दावा करना सुरक्षित नहीं है, ठीक है? इसके कुछ और कारण भी हो सकते हैं, लेकिन इससे हमें पता चलता है कि त्रेडा ने शायद अपने मसीहा रहस्य पर बहुत ज़्यादा काम किया है। हालाँकि, अंततः, यीशु को गलील में अस्वीकार कर दिया जाता है और उसे एहसास होता है कि उसे पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए मरना और फिर से उठना होगा, शायद भजन 22 या यशायाह 53 के बारे में सोचते हुए।

हालाँकि, यीशु ने पुनरुत्थान के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय अपनी मृत्यु को झूठा साबित करने का फैसला किया। वह कई सहायकों का उपयोग करके एक साजिश रचता है जो केवल साजिश के एक हिस्से में हैं, ठीक है, इसलिए मुझे निश्चित रूप से नहीं पता कि अन्य व्यक्ति क्या कर रहे हैं या अन्य लोग कौन हैं। अधिकारियों के साथ तनाव पैदा करने के लिए लाजर की मृत्यु और पुनरुत्थान को झूठा साबित किया गया है।

विजयी प्रवेश के लिए पंथ की व्यवस्था की जाती है, जिससे यहूदी अधिकारियों को विद्रोह से बचने के लिए कार्रवाई करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यीशु अपनी गिरफ्तारी के समय को नियंत्रित करता है, ताकि वे उसे एक निश्चित बिंदु तक न पा सकें, ताकि उसे केवल कुछ घंटों के लिए सूली पर चढ़ाया जा सके। और फिर, जब उसे इन कुछ घंटों के लिए सूली पर चढ़ाया जा रहा था, तो वह कोड शब्द चिल्लाता है, अली, अली, लामा सबाचथानी, और एक सहायक एक स्पंज के साथ बाहर निकलता है जो उसे नशीला पदार्थ देता है, और यीशु कोमा में चले जाते हैं।

खैर, शोएनफील्ड इसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। शोएनफील्ड का मानना है कि रोमन सैनिक द्वारा भाले के वार से यह साजिश, जो लगभग पूरी तरह से सही थी, बर्बाद हो जाती है। यीशु को जोसेफ अरिमथिया और एक अज्ञात साजिशकर्ता द्वारा क्रूस से नीचे उतारा जाता है, जिसे हम

एक्स कहेंगे। उस रात, यीशु को कब्र से निकाला जाता है, दूसरी जगह ले जाया जाता है, और पुनर्जीवित किया जाता है।

वह एक्स को शिष्यों तक ले जाने के लिए एक संदेश देता है। संदेश, उनसे कहो कि वे गलील में मुझसे मिलें। लेकिन एक्स के चले जाने के बाद, यीशु मर जाता है और एक्स संदेश देने की कोशिश कर रहा है, लेकिन जाहिर तौर पर उसे पता नहीं है कि यीशु मर चुका है।

अगली सुबह कब्र पर मौजूद महिलाओं को एक्स बताने की कोशिश करता है, लेकिन उन्हें लगता है कि वह एक देवदूत है। वह इम्मांस के रास्ते पर कुछ शिष्यों को बताने की कोशिश करता है, लेकिन वे उसे यीशु समझ लेते हैं। उलझन जारी रहती है।

ऐसी कोई भी उपस्थिति जहाँ यीशु को तुरंत पहचाना नहीं गया था, उसे एक्स के रूप में माना जाता है। स्पष्ट और ठोस उपस्थिति बाद में चर्च द्वारा बनाई जाती है। खैर, स्कोनफील्ड की कहानी उस समय के बारे में मसीहाई अपेक्षाओं पर कुछ जोर देने के साथ मृत सागर स्कॉल की खोज के प्रभाव को दर्शाती है। वास्तव में, मृत सागर स्कॉल हमें उस दिशा में बहुत सारी जानकारी देते हैं जो हमें पहले नहीं मिली थी, और यह हमें एक स्रोत के रूप में जॉन के सुसमाचार के लिए नए सिरे से सराहना देता है।

यह पुराने नियम की भविष्यवाणियों के साहसिक उपचार में अनोखा है। इसमें वह क्लासिक विशेषताएं हैं जिन्हें हम कथानक सिद्धांत कहते हैं। इसलिए यह हमें कथानक सिद्धांतों पर एक पल के लिए अलग ले जाता है।

कथानक सिद्धांत का दावा है कि ऐतिहासिक घटनाओं के कुछ सेट को बताए गए या सतही प्रेरणाओं आदि से नहीं, बल्कि एक अघोषित, गुप्त, छिपे हुए कथानक से बेहतर ढंग से समझाया जा सकता है। कुछ उदाहरण हैं यह दावा कि कैनेडी की हत्या सीआईए ने की थी, या लिंकन की हत्या कट्टरपंथी रिपब्लिकन ने की थी, या यह कि 9/11 की आपदाएँ वास्तव में अमेरिकी सरकार द्वारा रची गई थीं। मानव इतिहास में स्पष्ट रूप से कथानक घटित होते हैं, लेकिन कथानक सिद्धांतों को गंभीर पद्धतिगत समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सबसे पहले, योजना जितनी बेहतर होगी, वह उतनी ही छिपी होगी, यानी, और इसलिए, हमारा डेटा उतना ही कम उपयोगी होगा। एक आदर्श प्लॉट डेटा से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता। इसलिए, जितना वास्तव में हो सकता है, उससे कहीं अधिक प्लॉट बनाना संभव है, इसलिए किसी एक प्लॉट के सच होने की संभावना वास्तव में बहुत, बहुत कम है।

अंतिम निर्णय से पहले किसी कथानक सिद्धांत को सही या गलत साबित करना असंभव है, और किसी विशेष कथानक सिद्धांत पर अपने विश्वदृष्टिकोण को टाँगना बहुत खतरनाक है। आइए जॉन मार्को एलेग्री, द सेक्रेड मशरूम एंड द क्रॉस, 1970 पर एक नज़र डालें। जॉन मार्को एलेग्री इंग्लैंड में मैनचेस्टर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे, और अंतर्राष्ट्रीय डेड सी स्कॉल टीम के एक अन्य ब्रिटिश प्रतिनिधि थे।

आप इस टीम के बारे में सोच रहे होंगे, है न? इस किताब ने उनकी अकादमिक प्रतिष्ठा को बर्बाद कर दिया। अगर आपको लगता है कि शोएनफील्ड के पास एक प्लॉट थ्योरी है, तो एलेग्री के पास एक सुपर प्लॉट थ्योरी है। बुल्टमैन या शोएनफील्ड से ज़्यादा क्रांतिकारी।

क्यों? जीसस कभी अस्तित्व में नहीं थे। ईसाई धर्म कभी अस्तित्व में नहीं था। यहूदी धर्म कभी अस्तित्व में नहीं था, कम से कम पहली सदी के इस हिस्से में तो नहीं।

उनकी पुस्तकें और शिक्षाएँ सभी कोड शब्दों की अभिव्यक्तियाँ हैं जिनका उपयोग एक सुपर-सीक्रेट मशरूम प्रजनन पंथ, सेक्स ड्रग पंथ या किसी भी तरह की चीज़ को छिपाने के लिए किया जाता है जो 70 के दशक में लोकप्रिय थी। यहूदी धर्म और ईसाई धर्म अब ऐसे नहीं लगते, क्योंकि उत्पीड़न के तहत रहस्य खो गए थे, और सामने वाले संगठन अपने आप ही जारी रहे और विकसित हुए। एलेग्री व्युत्पत्ति, शब्दों की व्युत्पत्ति द्वारा अपनी स्थिति को साबित करने की कोशिश करता है।

वह यह साबित करने की कोशिश करता है कि ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट में मतिभ्रम पैदा करने वाले मशरूम और यौन संभोग से संबंधित गुप्त कोड भरे पड़े हैं। वह लैटिन, ग्रीक, अरबी, फ़ारसी, सिरिएक, हिब्रू, अरामी, संस्कृत, उगरिटिक, अक्कादियन और सुमेरियन का इस्तेमाल करता है, जो सभी बेहतरीन भाषाविदों को हैरान कर देता है। यह जॉन मार्को एलेग्री, द सेक्रेड मशरूम एंड द क्रॉस है।

मॉर्टन स्मिथ, द सीक्रेट गॉस्पेल, 1973, और जीसस द मैजिशियन, 1978. मॉर्टन स्मिथ कोलंबिया विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास के प्रोफेसर थे। उन्होंने पहले द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इज़राइल में अध्ययन किया, हिब्रू विश्वविद्यालय से पीएचडी की और फिर बाद में हार्वर्ड से पीएचडी की।

स्मिथ का दावा है कि उन्होंने 1958 में इज़राइल के मार सबा ग्रीक ऑर्थोडॉक्स मठ में क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्ज़ेंड्रिया का एक पत्र खोजा था, जो लगभग 200 ई. में फला-फूला था, हालाँकि, इसे 1700 के दशक में प्रकाशित एक ग्रीक पुस्तक के पीछे कॉपी किया गया था, इसलिए यह पीछे के खाली पन्नों में था। पत्र के साथ पुस्तक, अगर कभी अस्तित्व में थी, तो गायब हो गई है। पत्र के पाठ के लिए, मॉर्टन स्मिथ के सीक्रेट गॉस्पेल के पृष्ठ 14 से 17 देखें।

पत्र कार्पोक्रेटियन नामक एक गूढ़ज्ञानवादी समूह द्वारा लगाए गए कुछ आरोपों का उत्तर देता है, जिनके पास मार्क के सुसमाचार का एक अलग संस्करण था, जिसमें उनके यौन अनैतिकता को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अश्लील सामग्री शामिल थी। क्लेमेंट का कहना है कि उनके पास मार्क का एक गुप्त लंबा संस्करण है, जिसमें अश्लील सामग्री शामिल नहीं है, जिसे कार्पोक्रेटियन ने चुराया और फिर अपने लिबर्टिन समूह के लिए भ्रष्ट कर दिया। स्मिथ कार्पोक्रेटियन के साथ यह दावा करते हुए पक्ष लेते हैं कि यीशु वास्तव में एक लिबर्टिन गूढ़ज्ञानवादी जादूगर हैं और यह उनके चमत्कारों, उनके ईश्वरत्व के व्यक्तिगत दावों, उनकी गोपनीयता और कानून के बारे में उनके बयानों की व्याख्या करता है, अर्थात् यह कि मनुष्य किसी भी तरह से कानून के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

अगर यह धोखाधड़ी है, तो यह कोई अनाड़ी धोखाधड़ी नहीं है, ठीक है। क्लेमेंट को इन विषयों में रुचि थी। पत्र क्लेमेंट की शैली से मिलता जुलता है।

अगर यह जालसाजी है, तो लेखक को कम से कम मॉर्टन स्मिथ जितना तो पता था, जो एक दिलचस्प सुराग है, और इससे यह सुझाव मिलता है कि मॉर्टन स्मिथ ने वास्तव में यह सब आविष्कार किया और सुनिश्चित किया कि पांडुलिपि अपनी स्याही की जांच या इस तरह की किसी भी चीज़ के लिए बची न रहे। आप कह सकते हैं कि कोई भी ऐसा नहीं करेगा, है न? खैर, हमारे पास मॉर्मनवाद के संबंध में एक सत्यापित मामला है। मैं 1840 के दशक में जोसेफ स्मिथ के बारे में नहीं सोच रहा हूँ, हालाँकि मुझे लगता है कि शायद यही है, लेकिन एक हालिया व्यक्ति।

यदि आप हाल ही में मॉर्मन धोखाधड़ी और धोखाधड़ी वाली मॉर्मन पांडुलिपियों पर Google खोज करते हैं, तो आप उस दिशा में कुछ सामग्री देख सकते हैं। हम समय के साथ कैसे काम कर रहे हैं? ठीक है, हम यहाँ जीसस सेमिनार पर एक त्वरित नज़र डालना चाहते हैं, जिसने पिछले 10-15 वर्षों में बहुत अधिक सार्वजनिक चर्चा की है। जीसस सेमिनार कट्टरपंथी न्यू टेस्टामेंट शोधकर्ताओं का एक समूह है जो 20 साल या उससे अधिक समय से जीसस पर एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तुति तैयार करने के लिए मिल रहे हैं, जो उनके विचार में, पारंपरिक ईसाई धर्म को पानी में डुबो देगा।

हर बार जब वे मिलते हैं तो उन्हें मीडिया में व्यापक प्रचार मिलता है, जो वैसे हर छह महीने में करते थे, और 1993 में, उन्होंने अपनी पहली पुस्तक-लंबाई प्रस्तुत की। यह रॉबर्ट फंक, रॉय हूवर और जीसस सेमिनार द्वारा संपादित पुस्तक थी जिसका नाम था द फाइव गॉस्पेल्स, द सर्व फॉर द ऑथेंटिक वर्ड्स ऑफ जीसस, न्यूयॉर्क मैकमिलन, 1993। मैं आपको एक छोटा सा स्केच देना चाहता हूँ कि वे कहाँ से आ रहे हैं और वे क्या परिणाम प्राप्त करते हैं, और फिर यहाँ मसीह के उदार जीवन के बारे में हमारी चर्चा समाप्त हो जाएगी, यदि आप चाहें तो।

अपनी पुस्तक के आरंभिक भाग में, पृष्ठ दो से पाँच तक, वे विद्वानों की बुद्धि के सात स्तंभ देते हैं। यही वे विश्वास या शिक्षाएँ हैं जिन पर उनका पूरा जीवन टिका हुआ है। पहला है इतिहास का यीशु बनाम आस्था का मसीह।

यह मसीह के बीच एक बड़ा अंतर है जिस पर लोग विश्वास करते हैं और इतिहास के यीशु के बीच। दूसरा है सिनॉट्रिक्स का यीशु बनाम जॉन का यीशु, और वे इतिहास के यीशु और सिनॉट्रिक्स के यीशु को चुनने का दावा कर रहे हैं। तीसरा दावा मार्क की प्राथमिकता है, कि मार्क का सुसमाचार पहले लिखा गया था।

चौथा क्यू का अस्तित्व है। हम वापस आएंगे और सिनॉट्रिक समस्या के संबंध में इस पर अधिक चर्चा करेंगे, लेकिन यह एक कथित दस्तावेज है जिसमें शिक्षाएँ, विशेष रूप से यीशु की बातें शामिल थीं, और इसका उपयोग मैथ्यू और ल्यूक ने मार्क के साथ किया था। इसलिए, मैथ्यू और ल्यूक ने अपने सुसमाचार बनाने के लिए मार्क और क्यू को थोड़े अलग तरीकों से एक साथ जोड़ा। पाँचवाँ स्तंभ, यदि आप चाहें, तो युगांतिक बनाम गैर-युगांतिक यीशु है।

तो, असली यीशु कौन है? दो अन्य। छठा, मौखिक संस्कृति बनाम मुद्रित संस्कृति। इसलिए, वे लिखित रूप में सुसमाचार सामग्री के मौखिक प्रसारण को बहुत महत्व देंगे।

हम फॉर्म आलोचना की हमारी चर्चा में इस पर चर्चा करेंगे। नंबर सात एक संदेहपूर्ण सिद्धांत है कि जब तक अन्यथा साबित न हो जाए, तब तक सुसमाचार को गैर-ऐतिहासिक माना जाता है। खैर, हमारे पास टाइम मशीन नहीं है, ठीक है? ऐतिहासिक दस्तावेजों को देखने का यह कुछ हद तक अजीब तरीका है।

अगर हम सामान्य तौर पर ऐसा करते हैं, तो आप वास्तव में इतिहास के बारे में कुछ नहीं जानते, ठीक है? लेकिन इसका बहुत कुछ उससे लेना-देना है जिसका हमने पहले उल्लेख किया था, चमत्कार की अस्वीकृति, और अगर चमत्कार नहीं हो सकता है, तो सुसमाचार बहुत विश्वसनीय नहीं हो सकते। फिर वे लिखित साक्ष्य और मौखिक साक्ष्य के नियमों का एक पूरा समूह देते हैं, और मैं उन्हें आपके लिए पढ़ूंगा, लेकिन हम यहां कहीं भी उन पर चर्चा नहीं करेंगे। लिखित साक्ष्य, क्लस्टरिंग और संदर्भ के नियम।

सुसमाचार प्रचारक अक्सर ऐसी कहावतों और दृष्टांतों को समूहों में रखते हैं जो यीशु से उत्पन्न नहीं हुए थे। इसलिए, उन्होंने इस सामग्री को फिर से व्यवस्थित किया है। दूसरे, सुसमाचार प्रचारक अक्सर कहावतों और दृष्टांतों को स्थानांतरित करते हैं या उनके लिए नए कथात्मक संदर्भ का आविष्कार करते हैं। फिर, संशोधन और टिप्पणी।

नंबर तीन, सुसमाचार प्रचारक अक्सर कहावतों या दृष्टांतों का विस्तार करते हैं या उन्हें एक व्याख्यात्मक ओवरले या टिप्पणी प्रदान करते हैं।

और चार, सुसमाचार प्रचारक अक्सर कहावतों को संशोधित या संपादित करते हैं ताकि उन्हें अपनी व्यक्तिगत भाषा, शैली या दृष्टिकोण के अनुरूप बनाया जा सके - गलत आरोपण।

नंबर पांच, आम विद्या या ग्रीक शास्त्रों के कोष से उधार लिए गए शब्द अक्सर यीशु के होठों पर रखे जाते हैं।

छह, सुसमाचार प्रचारक अक्सर अपने कथनों को यीशु के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं - कठिन कहावतें।

सात, कठिन कहावतों को अक्सर दैनिक जीवन की स्थितियों के अनुकूल बनाने के लिए संचरण की प्रक्रिया में नरम कर दिया जाता है।

आठ, कठिन कहावतों में भिन्नता अक्सर प्रारंभिक ईसाई समुदाय के संघर्ष को दर्शाती है कि वे कहावतों की व्याख्या या अपनी स्थिति के अनुकूल कैसे हो सकते हैं। और फिर उनमें से चार, यीशु को ईसाई बनाना।

नौ, ईसाई भाषा में व्यक्त की गई बातें या दृष्टांत सुसमाचार प्रचारकों या उनके ईसाई पूर्ववर्तियों की रचना हैं। यीशु की बातों के साथ यहूदी ईसाई स्थिति को याद रखें।

दस कथन या दृष्टांत जो सुसमाचार की भाषा या दृष्टिकोण के विपरीत हैं, जिसमें वे अंतर्निहित हैं, पुरानी परंपराओं को दर्शाते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि वे परंपराएं यीशु से उत्पन्न हुई हों। ग्यारह, ईसाई समुदाय दावों और कभी-कभी विशेषताओं का बचाव करने के लिए क्षमाप्रार्थी कथन विकसित करता है, और कभी-कभी, ऐसे कथनों को यीशु के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। बारह कथन और कथाएँ जो यीशु की मृत्यु के बाद हुई घटनाओं के ज्ञान को दर्शाती हैं, वे उनसे पहले के प्रचारकों या मौखिक परंपरा की रचनाएँ हैं।

वास्तव में हम वहाँ कोई पूरी हुई भविष्यवाणी नहीं पा रहे हैं - सुसमाचार से लेकर यीशु तक के मौखिक साक्ष्य के नियम। एक, केवल वे कथन और दृष्टांत जो 30 से 50 ई.पू. के मौखिक काल तक वापस खोजे जा सकते हैं, संभवतः यीशु से उत्पन्न हुए हैं।

दो, दो या अधिक स्वतंत्र स्रोतों में परखी गई कहावतें और दृष्टांत उन स्रोतों से पुराने हैं जिनमें वे सन्निहित हैं। तीन, दो अलग-अलग संदर्भों में परखी गई कहावतें या दृष्टांत संभवतः पहले स्वतंत्र रूप से प्रसारित हुए होंगे। चार, दो या अधिक अलग-अलग रूपों में प्रमाणित एक ही या समान सामग्री का अपना जीवन होता है और इसलिए, यह किसी पुरानी परंपरा से उत्पन्न हो सकती है।

पाँच अलिखित परंपराएँ जो लिखित सुसमाचारों द्वारा अपेक्षाकृत बाद में पकड़ी गई, वे बहुत पुरानी परंपराओं को संरक्षित कर सकती हैं: मौखिकता और स्मृति। छठी, मौखिक स्मृति उन कथनों और उपाख्यानों को सबसे अच्छी तरह से बनाए रखती है जो संक्षिप्त, उत्तेजक, यादगार और अक्सर दोहराए जाते हैं।

सात, जीवित सुसमाचारों में यीशु के सबसे अधिक बार दर्ज किए गए शब्द सूक्तियों और दृष्टांतों का रूप लेते हैं। आठ, सुसमाचार परंपरा की सबसे प्रारंभिक परत, सरल सूक्तियों और दृष्टांतों से बनी है जो लिखित सुसमाचारों से पहले मौखिक रूप से प्रसारित की गई थी। नौ, यीशु के शिष्यों ने दुर्लभ मामलों को छोड़कर, कथनों और दृष्टांतों का सार या सार याद रखा, न कि उनके सटीक शब्द। फिर, कहानीकार के लाइसेंस पर एक बड़ा खंड है।

दस, यह व्यक्त करने के लिए कि यीशु ने विशेष अवसरों पर क्या कहा है, यीशु ने उनसे कहा, चलो दूसरी तरफ चलते हैं। ग्यारह, मार्क को यीशु के संदेश को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए, जैसा कि मार्क इसे समझता है, समय समाप्त हो गया है।

परमेश्वर का शाही शासन समाप्त होने वाला है। अपने तरीके बदलें और सुसमाचार पर भरोसा रखें। अपनी खुद की सुसमाचार कहानी के परिणाम की भविष्यवाणी करने और अपने समुदाय में घोषित किए जा रहे सुसमाचार को सारांशित करने के लिए, मार्क ने यीशु से कहा कि आदम के बेटे को उसके दुश्मनों को सौंप दिया जा रहा है और वे उसे मार डालेंगे और मारे जाने के तीन दिन बाद वह जी उठेगा।

तेरह, शिष्यों और अन्य लोगों के बारे में मार्क के अपने विचार को व्यक्त करने के लिए, मार्क ने यीशु को तूफान के शांत हो जाने के बाद भयभीत शिष्यों से यह कहते हुए दिखाया, तुम इतने कायर क्यों हो? तुम अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं करते, है न? चौदह, चूँकि मार्क ने भरोसे को

बीमारों के इलाज से जोड़ा है, इसलिए उसने यीशु को उस महिला से यह कहते हुए दिखाया जिसे उसने अभी-अभी ठीक किया है, बेटी, तुम्हारे भरोसे ने तुम्हें ठीक कर दिया है। यीशु की टिप्पणी मार्क के कथन से अलग समझी जा सकती है, और वह वहाँ एक भी चमत्कार करने में असमर्थ था, सिवाय इसके कि उसने कुछ लोगों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक किया, हालाँकि वह हमेशा भरोसे की कमी से हैरान था। उपवास के बाद के अभ्यास को सही ठहराने के लिए, इस तथ्य के बावजूद कि यीशु और उनके पहले शिष्यों ने उपवास नहीं किया था, वे दिन आएंगे जब दूल्हे को उनसे दूर ले जाया जाएगा और फिर वे उस दिन उपवास करेंगे।

सही स्वीकारोक्ति प्राप्त करने के लिए, यीशु ने मार्क से पूछा, मार्क ने यीशु से पूछा, लोग मेरे बारे में क्या कह रहे हैं? बातचीत में थोड़ी देर बाद वह पूछता है, तुम्हारे बारे में क्या? तुम मुझे कौन कहते हो? और फिर पतरस जवाब देता है, तुम अभिषिक्त हो, जो कि ईसाइयों को कहना चाहिए - विशिष्ट प्रवचन। यीशु की विशिष्ट बातचीत विशिष्ट थी।

इसे आम तौर पर आम विद्या से अलग किया जा सकता है, अन्यथा यीशु के प्रामाणिक शब्दों की खोज करना व्यर्थ है। 18. यीशु के दृष्टांत और कथन सामाजिक और धार्मिक विचारधारा के विरुद्ध हैं।

19. यीशु के कथन और दृष्टांत आश्चर्यचकित और चौंका देने वाले हैं। वे विशिष्ट रूप से भूमिकाओं को बदलने या सामान्य रोज़मर्रा की अपेक्षाओं को विफल करने का आह्वान करते हैं।

20. यीशु के कथन और दृष्टांत अक्सर अतिशयोक्ति, हास्य और विरोधाभास से भरे होते हैं।

21. यीशु की छवियाँ ठोस और जीवंत हैं। उनके कथन और दृष्टांत आम तौर पर रूपकात्मक होते हैं और उनका कोई स्पष्ट अनुप्रयोग नहीं होता। और फिर संक्षिप्त ऋषि, कम शब्दों वाले ऋषि।

यीशु आम तौर पर संवाद या बहस की पहल नहीं करते, न ही वे लोगों को चंगा करने की पेशकश करते हैं।

23. यीशु ने कभी भी प्रथम पुरुष में अपने बारे में घोषणाएँ या बातें नहीं कीं।

24. यीशु अभिषिक्त मसीहा होने का दावा नहीं करते। खैर, ये कुछ दृष्टिकोण हैं जो आप यीशु सेमिनार में देखते हैं।

उनके परिणामों के बारे में थोड़ा: द फाइव गॉस्पेल्स नामक पुस्तक में, यीशु के शब्द रंगों में छपे हैं। और उन्होंने लाल रंग का इस्तेमाल किया है क्योंकि यीशु ने निस्संदेह यह या ऐसा ही कुछ कहा था।

गुलाबी, यीशु ने शायद ऐसा कुछ कहा होगा। ग्रे, यीशु ने ऐसा नहीं कहा, लेकिन यह विचार उत्पन्न हुआ, इसमें निहित विचार, उनके अपने विचार के करीब है। और काले, यीशु ने ऐसा नहीं कहा।

यह बाद की या अलग परंपरा के परिप्रेक्ष्य या विषय-वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है। खैर, परिणाम। लाल और गुलाबी अक्षरों की कहावतों की एक सूची इस चीज़ पर गुलाबी या लाल रंग में स्कोर करने वाली कहावतों को सूचीबद्ध करती है।

मैं यहाँ इस बारे में थोड़ी चर्चा करना चाहता हूँ कि वे स्कोरिंग कैसे करते हैं। वे मूल रूप से मार्बल लेते थे, और उनमें से प्रत्येक मार्बल लाल, गुलाबी, ग्रे और काले रंग का होता था। वे एक टोकरी को इधर-उधर घुमाते थे, और आप उसमें उस विशेष कथन के लिए एक डालते थे जिस पर वे वोट कर रहे थे।

इसलिए, लाल या गुलाबी कथनों की एक सूची में 90 कथनों को सूचीबद्ध किया गया है, जिन्हें लाल या गुलाबी रंग में स्कोर किया गया है, यदि आप चाहें, तो विभिन्न सुसमाचारों में उनके विभिन्न संस्करणों पर विस्तृत वोट के साथ। यह पाँच सुसमाचारों में पृष्ठ 549 से 553 पर है। पृष्ठ 5 पर एक टिप्पणी के अनुसार, सुसमाचारों में यीशु को दिए गए 82% शब्द वास्तव में उनके द्वारा नहीं बोले गए थे।

अगर आप चाहें तो काला या ग्रे। और इसलिए, जीसस सेमिनार के अनुसार, सुसमाचारों में जीसस द्वारा बोले गए केवल 18% शब्दों को ही उनका माना जाता है। मार्क में, केवल एक कथन को प्रामाणिक लाल माना जाता है।

वह क्या है? सम्राट को वह दो जो सम्राट का है और भगवान को वह दो जो भगवान का है। बहुत से लोग गुलाबी रंग में भी नहीं आते। जॉन में, केवल एक कहावत इसे गुलाबी बनाती है।

एक भविष्यवक्ता को अपने ही क्षेत्र में कोई सम्मान नहीं मिलता, जॉन 444। ये उनके अपने अनुवाद हैं, इसलिए उनमें ब्रुकलिन की तरह की एक तरह की तीखी आवाज़ है या कुछ और। थॉमस के सुसमाचार को जॉन से आगे, इन दोनों से आगे, जॉन और मार्क दोनों से आगे, कई लाल और थोड़े गुलाबी रंग के साथ मैथ्यू और ल्यूक के बराबर माना जाता है।

खैर, जवाब। जीसस सेमिनार के काम के जवाब में अब तक मैंने जो सबसे अच्छी किताब देखी है, वह माइकल विल्किंस और जेपी मोरलैंड की जीसस अंडर फायर है। आधुनिक विद्वत्ता ऐतिहासिक जीसस का नया आविष्कार करती है।

उदारवादी जीवन के प्रति कुछ विशिष्ट प्रतिक्रियाएँ, इनमें से कुछ यीशु संगोष्ठी से पहले की हैं, आदि। क्रेग ब्लोमबर्ग, उत्कृष्ट कार्य, द हिस्टोरिकल रिलायबिलिटी ऑफ़ द गॉस्पेल्स, 87 में इंटरवर्सिटी द्वारा प्रकाशित। ग्रेगरी बॉयड, सिनिक सेज या सन ऑफ़ गॉड, रिवाइजिस्ट रिप्लाई के युग में वास्तविक यीशु को पुनः प्राप्त करना, 1995, ब्रिजपॉइंट।

विलियम लेन क्रेग, रीजनेबल फेथ, क्रिस्चियन टुथ एंड एपोलॉजेटिक्स, क्रॉसवे बुक्स, 1994. जोश मैकडोवेल, एक सहयोगी, बिल विल्सन के साथ, जो आप कह सकते हैं कि उनकी पिछली पुस्तक की अगली कड़ी है, और यह नई पुस्तक है हे वॉकड अमंग अस, एविडेंस फॉर हिस्टोरिकल जीसस, हियर इज लाइफ, 1988. और रॉबर्ट बी. स्ट्रिम्पल, द मॉडर्न सर्च फॉर द

रियल जीसस, एन इंट्रोडक्टरी सर्वे ऑफ द हिस्टोरिकल रूट्स ऑफ गॉस्पेल क्रिटिसिज्म,
प्रेसबिटेरियन रिफॉर्म, 1995.

तो यह एक सुझाव है.